नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ

जल गंध सुमन अखंड तन्दुल चरू सु दीप सु धूपकं।
फल द्रव्य शुद्ध दधी सुमिश्रित अर्घ देय अनुपकं।
रवि सौम भूमिज सौम्य गुरू कवि शनि तमो पूत केतवे।
पूजिये चौबीस जिन ग्रहारिष्ट नाशन हेतवे।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रह विघ्न अरिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यं।।

ऋषिमंडल का अर्घ

जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवन, वारि तुम पद में दिया।।
जहं सुभग् ऋषिमंडल विराजै, पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव -विनाशन-समर्थाय रोगशोक सर्व संकट-हराय सर्व शान्ति पुष्टिकराय, श्री वृषभादि तीर्थंकर अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित, चतुर्णिकाय देव, चव प्रकार अवधि धारक श्रमण अष्ट ऋद्ध संयुक्त बीस चार सूरि तीन ह्रीं अर्हंतबिम्ब दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शास्त्र जी का अर्घ (जिनवाणी)

वीर हिमाचल तैं निकरी गुरू गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली, जग की जड़ता तपदूर करी है।।
ज्ञान पयो निधि माहीं रली, बहु भंग तरंगनी सो उछरी है।
ताशुचि शारद गंगनदी, प्रति मैं अंजुली कर शीश धरी है।।
सकल विरोध विहंडनी, स्यादवाद युत जान।
पुनः वाद मत खण्डनी, नमो देवि जिनवाणी।।
जा वाणी के ज्ञान से, सूझे लोकालोक।
सो वाणी जयवन्त नित, सदा देत हूँ धोक।।
उदक चन्दन तन्दुल पुष्प कै, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकै।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन शास्त्र महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग अनेक नय जिनवाणी मण्डितेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सप्तर्षि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्पं चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूं।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो के चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ

उदक चन्दन तुंदुल पुष्पकै चरूसु दीप सू धूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहेजिननाम महं यजै।

ॐ ह्रीं जहाँ जहाँ मुनि महाराज माताजी क्षुल्लक क्षुल्लिकाणीजी संघ सहित विराजमान तिनके चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तुंदुल पुष्पकै चरूसु दीप सू धूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहेजिननाम महं यजै।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप में तीन कम ९ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दन तुंदुल पुष्पकै चरूसु दीप सू धूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहेजिननाम महं यजै।

ॐ ह्रीं समवसरण में चारों दिशा में भगवान विराजमान तिनके चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तुंदुल पुष्पकै चरूसु दीप सू धूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहेजिननाम महं यजै।

ॐ ह्रीं पूजा स्थल में विराजमान श्री जी सहित अन्य चैत्य चैत्यालयों, मंदिर, नसियाँ जी आदि में विराजमान श्री चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतेश्वर महाराज थारा गुण गाउँ,
थे घर में ही बेराग चरणों में ध्याउँ।
मैं अष्ट द्रव्य ले आय पूजा के लिए,
मैं पूजा भाव रचाय भव भव दुख हरे।

ॐ ह्रीं भरतेश्वर महाराज के चरणों में अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।